

भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद व स्वदेशी आंदोलन

डॉ दिलीप पीपाडा

प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग, एस. एम. बी. राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा राजसमंद राजस्थान

परिचय

स्वदेशी आंदोलन और भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐसा अध्याय है, जिसमें उपनिवेशवादी शोषण के विरुद्ध आत्मनिर्भरता की चेतना जागृत हुई। यह आंदोलन केवल राजनीतिक विरोध नहीं था, बल्कि आर्थिक जागरूकता और सांस्कृतिक आत्मगौरव का समन्वय भी था। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध से प्रारंभ होकर यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी उत्पादों के उपयोग तथा देशी उद्योगों के विकास के माध्यम से एक शक्तिशाली आर्थिक राष्ट्रवाद की नींव रखी। इसने भारतीय जनता में यह विश्वास उत्पन्न किया कि जब तक देश आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं होगा, तब तक सच्चा स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता।

स्वदेशी आंदोलन का उद्भव

स्वदेशी आंदोलन का उद्भव 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध से हुआ, जब ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन ने प्रशासनिक सुविधा का बहाना बनाकर बंगाल को धार्मिक आधार पर दो भागों में बाँट दिया। इस विभाजन को भारतीय जनता ने अंग्रेजों की “फूट डालो और राज करो” नीति के तहत राष्ट्र को कमजोर करने का प्रयास माना। इसके प्रतिकार में पूरे देश में ब्रिटिश वस्तुओं और उत्पादों के बहिष्कार का आह्वान हुआ और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की जनचेतना पनपी। विद्यार्थियों, शिक्षकों, व्यापारियों और महिलाओं सहित समाज के सभी वर्गों ने इसमें सक्रिय भागीदारी निभाई। यह आंदोलन जल्द ही केवल विभाजन विरोध तक सीमित न रहकर ब्रिटिश शासन की आर्थिक नींव को चुनौती देने वाला एक व्यापक राष्ट्रवादी आंदोलन बन गया। इस आंदोलन में राष्ट्रवादी नेताओं जैसे बाल गंगाधर तिलक, अरविंद घोष, लाला लाजपत राय, और बाद में महात्मा गांधी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर्थिक राष्ट्रवाद की अवधारणा

आर्थिक राष्ट्रवाद वह विचारधारा है जिसमें किसी राष्ट्र की आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और स्वदेशी संसाधनों पर आधारित विकास को सर्वोपरि माना जाता है। भारत में यह अवधारणा ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की शोषणकारी नीतियों के प्रतिकार स्वरूप उभरी, जब देश की प्राकृतिक संपदा और धन का दोहन कर उसे ब्रिटेन भेजा जा रहा था। दादाभाई नौरोजी की ड्रेन थ्योरी और आर. सी. दत्त जैसे राष्ट्रवादी विचारकों के आर्थिक विश्लेषणों ने भारतीयों में यह चेतना उत्पन्न की कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक भारत आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं बनता। स्वदेशी आंदोलन ने इसी आर्थिक राष्ट्रवाद को मूर्त रूप दिया, जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी उद्योगों का समर्थन और स्थानीय उत्पादन एवं उपभोग को प्रोत्साहन प्रमुख घटक थे।

दादाभाई नौरोजी की ड्रेन थ्योरी

दादाभाई नौरोजी, जिन्हें ‘भारतीय राष्ट्रवाद का पितामह’ कहा जाता है, ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आर्थिक शोषण को उजागर करने के लिए ‘ड्रेन थ्योरी’ (संपत्ति निष्कासन सिद्धांत) का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांत के अनुसार, ब्रिटिश सरकार भारत से हर वर्ष भारी मात्रा में धन, संसाधन और राजस्व अपने देश में स्थानांतरित कर रही थी, जिसके बदले में भारत को कोई ठोस प्रतिलाभ नहीं मिल रहा था। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ पञ्चमत्तजल ंदक न्दठतपजपी त्सम पद प्दकपंष् ;1901द्ध में बताया कि यह धन निष्कासन ही भारत की बढ़ती गरीबी और आर्थिक पतन का प्रमुख कारण था। उनके अनुसार, प्रशासनिक खर्च, सेना का रख-रखाव, विदेशी अधिकारियों के वेतन और मुनाफे का ब्रिटेन भेजा जाना इस ड्रेन के मुख्य स्रोत थे। ड्रेन थ्योरी ने भारतीयों में आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना को बल दिया और स्वदेशी आंदोलन जैसे आंदोलनों को वैचारिक आधार प्रदान किया।

आर. सी. दत्त और एम. जी. रानाडे के राष्ट्रवादी आर्थिक दृष्टिकोण

आर. सी. दत्त और एम. जी. रानाडे भारत के प्रमुख राष्ट्रवादी अर्थशास्त्री थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियों की कठोर आलोचना की और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि ये नीतियाँ भारत को योजनाबद्ध रूप से निर्धन बना रही हैं। आर. सी. दत्त ने अपनी पुस्तक प्ज्ीम म्बवदवउपब भ्मेजवतल व िप्दकपं नदकमत मंतसल ठतपजपी त्समष् में यह तर्क दिया कि ब्रिटिश भूमि

व्यवस्था, भारी कराधान, और नकदी फसलों पर अत्यधिक निर्भरता ने भारतीय कृषि और ग्रामीण जीवन को बर्बादी के कगार पर पहुँचा दिया। वहीं एम. जी. रानाडे ने अपने व्याख्यानों और लेखों में यह स्पष्ट किया कि ब्रिटिश शासन में आर्थिक नीतियाँ स्वदेशी उद्योगों और व्यापार को दबा रही हैं, जिससे भारत में उत्पादन क्षमताएँ कम हो रही हैं और बेरोजगारी बढ़ रही है। इन दोनों विचारकों की रचनाओं ने भारतीयों में आर्थिक चेतना को जागृत किया और स्वदेशी आंदोलन जैसी राष्ट्रवादी पहलियों को वैचारिक आधार प्रदान किया।

स्वदेशी आंदोलन के आर्थिक आयाम

स्वदेशी आंदोलन के मूल में आर्थिक आत्मनिर्भरता और औपनिवेशिक आर्थिक शोषण का विरोध निहित था। इस आंदोलन ने भारतीय जनता से विदेशी वस्तुओं, विशेषतः ब्रिटिश कपड़ों, का बहिष्कार करने और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का आह्वान किया। इसके परिणामस्वरूप खादी, हथकरघा उद्योग, घरेलू लघु उद्योगों और पारंपरिक शिल्पों को नया जीवन मिला। इस आंदोलन के दौरान कई स्वदेशी संस्थानों, बैंकों और उद्योगों की स्थापना हुई, जैसे बंगाल केमिकल्स, स्वदेशी स्टोर्स, और टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी। साथ ही, भारतीय व्यापारियों और उपभोक्ताओं के बीच यह भावना मजबूत हुई कि अपने देश के उत्पादों को अपनाकर ही आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार स्वदेशी आंदोलन ने केवल ब्रिटिश वस्तुओं का विरोध नहीं किया, बल्कि भारत की आर्थिक संरचना को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। इसके लिए निम्न उपाय काम में लिए गये।

1. स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग

स्वदेशी आंदोलन के दौरान स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग न केवल एक आर्थिक नीति थी, बल्कि यह एक राष्ट्रीय कर्तव्य और प्रतीकात्मक प्रतिरोध बन गया था। लोगों से आह्वान किया गया कि वे ब्रिटिश निर्मित कपड़ों, साबुन, दवाइयों और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं का बहिष्कार करें और उनके स्थान पर देश में बने उत्पादों को अपनाएँ। इसके परिणामस्वरूप चरखा चलाकर खादी पहनने की परंपरा शुरू हुई, जो आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनी। सार्वजनिक स्थानों पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाती थी, जिससे लोगों में स्वदेशी वस्तुओं के प्रति सम्मान और प्रेरणा उत्पन्न होती थी। इस विचार ने घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया, लघु उद्योगों को जीवित किया और भारत की पारंपरिक कारीगरी को नया जीवन प्रदान किया। स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग केवल आर्थिक क्रांति नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन का रूप बन गया, जिसने औपनिवेशिक शासन की जड़ों को चुनौती दी।

2. घरेलू उद्योगों का विकास

स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव से भारत में घरेलू उद्योगों के विकास को एक नई दिशा मिली। आंदोलनकारियों ने यह समझा कि विदेशी वस्तुओं और उत्पादों का बहिष्कार तभी सार्थक होगा जब देश में उनके स्वदेशी विकल्प उपलब्ध हों। इस सोच के तहत खादी, हथकरघा, कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प और पारंपरिक उत्पादन प्रणालियों को पुनर्जीवित किया गया। इसके साथ ही कई नए स्वदेशी उद्योग और उद्यम अस्तित्व में आए, जैसे बंगाल केमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल्स, टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी, और स्वदेशी बीमा और बैंकिंग संस्थान। इन प्रयासों ने न केवल आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया, बल्कि भारतीय व्यापारियों, शिल्पकारों और कारीगरों को आर्थिक स्थायित्व भी प्रदान किया। घरेलू उद्योगों का यह पुनर्जागरण भारत की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था को चुनौती देने वाला एक सशक्त आर्थिक राष्ट्रवादी कदम था, जिसने स्वतंत्र भारत की औद्योगिक नींव को मजबूत करने में भी योगदान दिया।

3. स्वदेशी शिक्षा

स्वदेशी आंदोलन के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में भी स्वावलंबन और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने के लिए 'स्वदेशी शिक्षा' की अवधारणा विकसित हुई। आंदोलनकारियों का मानना था कि ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली केवल अंग्रेजी शासन की सेवा के लिए नौकर तैयार कर रही है और भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा मूल्यबोध को उपेक्षित कर रही है। इस विरोध के परिणामस्वरूप कई राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की गई, जैसे नेशनल कॉलेज, कलकत्ता, जहाँ सुभाष चंद्र बोस और रविन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महान व्यक्तित्वों ने शिक्षा ग्रहण की और देश की स्वतंत्रता के आन्दोलन में अपना योगदान दिया। इन संस्थानों में भारतीय भाषाओं, परंपराओं, और स्वदेशी दृष्टिकोण पर आधारित पाठ्यक्रमों को महत्व दिया गया। स्वदेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि छात्रों में राष्ट्रीय स्वाभिमान, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता की भावना को जगाना भी था। इस प्रकार, स्वदेशी शिक्षा आंदोलन ने ब्रिटिश मानसिकता पर आधारित औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली को चुनौती दी और स्वतंत्र भारत की शिक्षा नीति की बुनियाद रखी।

4. ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पुनर्जीवन

स्वदेशी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण आयाम भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनर्जीवन से जुड़ा था। अंग्रेजी शासन की नीतियों ने जहाँ एक ओर ग्रामीण कारीगरों, बुनकरों और कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया था, वहीं स्वदेशी आंदोलन ने इन्हें फिर से

जीवित करने का प्रयास किया। चरखा चलाने, खादी पहनने और स्थानीय हस्तशिल्प को अपनाने की प्रेरणा ने गाँवों में नए रोजगार और आजीविका के अवसर पैदा किए। आंदोलनकारियों का मानना था कि आत्मनिर्भर भारत की नींव गाँवों की आर्थिक मजबूती पर टिकी है। महात्मा गांधी ने भी 'ग्राम स्वराज' की अवधारणा को बल देते हुए कहा कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। इस सोच ने ग्रामीण उत्पादकों को नई ऊर्जा दी और बाजार से उनका सीधा संबंध स्थापित किया। परिणामस्वरूप स्वदेशी आंदोलन केवल शहरी मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर गाँवों की आर्थिक चेतना को भी जगाने वाला परिवर्तनकारी आंदोलन बन गया।

महात्मा गांधी और स्वदेशी विचार

महात्मा गांधी के लिए स्वदेशी केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक व्यापक आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन था। उनका मानना था कि भारत तभी सच्चे अर्थों में स्वतंत्र हो सकता है जब वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने और अपने संसाधनों, उत्पादों व श्रम पर भरोसा करे। गांधीजी ने चरखे को स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक बनाकर खादी को केवल वस्त्र नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वावलंबन का प्रतीक बना दिया। उन्होंने भारतीयों से आग्रह किया कि वे न केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें, बल्कि खुद उत्पादन प्रक्रिया में भाग लेकर ग्रामीण भारत की आजीविका का समर्थन करें। गांधीजी का 'स्वदेशी' विचार केवल ब्रिटिश पूँजीवाद का विरोध नहीं था, बल्कि यह एक वैकल्पिक अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव था, जिसमें स्थानीय उत्पादन, विकेन्द्रीकरण, और नैतिक उपभोग को प्राथमिकता दी गई। इस प्रकार गांधीजी ने स्वदेशी को जन-आंदोलन बना दिया, जो भारत की स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक पुनर्निर्माण की नींव भी बन गया।

आर्थिक राष्ट्रवाद का दीर्घकालीन प्रभाव

स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से जन्मी आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और स्वतंत्र भारत की आर्थिक नींव को वैचारिक आधार प्रदान किया। इस आंदोलन ने भारतीयों को यह बोध कराया कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी टिकाऊ हो सकती है, जब उसके साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता भी हो। इसके प्रभावस्वरूप भारत में स्वदेशी उद्योगों, बैंकिंग संस्थाओं और शिक्षा प्रणालियों की स्थापना हुई, जो आगे चलकर औद्योगिक विकास के स्तंभ बने। आर्थिक राष्ट्रवाद ने उपनिवेशवाद की आर्थिक जड़ें कमजोर कीं और भारतीय व्यापारियों, किसानों व कारीगरों को आत्मसम्मान और पहचान दी। इस प्रकार, स्वदेशी आंदोलन से उत्पन्न आर्थिक राष्ट्रवाद केवल एक तत्कालीन रणनीति न होकर एक दीर्घकालीन राष्ट्रीय आर्थिक दृष्टिकोण बन गया, जिसने भारत की आर्थिक दिशा और नीतियों को दशकों तक प्रभावित किया। भारतीय उद्योगों का विकास कई घरेलू कंपनियों और संस्थानों की नींव पड़ी, जो आगे चलकर भारत की औद्योगिक रीढ़ बनीं।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्थिक राष्ट्रवादकी भावना के कारण लोगों में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ भारतीयों में यह भावना विकसित हुई कि राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आर्थिक स्वतंत्रता अनिवार्य है सही मायने में यह आंदोलन 'आत्मनिर्भर भारत' की आज की सोच का प्रारंभिक रूप था। इस आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना का ही एक रूप बाँयकॉट आंदोलन के रूप में सामने आया जो आगे चलकर गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन में भी विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की रणनीति प्रभावी रही।

आलोचनात्मक विश्लेषण

स्वदेशी आंदोलन और आर्थिक राष्ट्रवाद निस्संदेह भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक क्रांतिकारी चरण थे, परंतु इनकी कुछ सीमाएँ भी रही हैं। यद्यपि आंदोलन ने शहरी मध्यम वर्ग, छात्रों, बुद्धिजीवियों और व्यापारियों को बड़ी संख्या में जोड़ा, लेकिन इसका प्रभाव ग्रामीण भारत और गरीब तबकों तक सीमित रूप से पहुँच सका। साथ ही, स्वदेशी वस्तुओं की गुणवत्ता, मात्रा और उत्पादन क्षमता ब्रिटिश वस्तुओं के मुकाबले कमजोर थी, जिससे जनसामान्य के लिए उनका पूर्णतः अपना व्यवहारिक रूप से कठिन रहा। इसके अलावा कई स्वदेशी उद्योगों को पूँजी, तकनीक और बाजार की कमी से जूझना पड़ा। फिर भी, इस आंदोलन की वैचारिक ताकत इतनी प्रभावशाली थी कि उसने स्वतंत्र भारत के आर्थिक विचारों और नीतियों की दिशा तय कर दी। स्वदेशी आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता यह रही कि उसने उपनिवेशवादी अर्थव्यवस्था के विरुद्ध एक जनचेतना और आत्मसम्मान का आधार निर्मित किया, जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया को मजबूत किया।

निष्कर्ष

स्वदेशी आंदोलन और भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारत की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुक्ति का समग्र प्रयास था। इस आंदोलन ने भारतीयों को आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और देशज उत्पादन की शक्ति का एहसास कराया। दादाभाई नौरोजी, आर. सी. दत्त, महात्मा गांधी जैसे विचारकों और नेताओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वतंत्रता का मार्ग केवल राजनीतिक विरोध से नहीं, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता और स्वदेशी चेतना से होकर गुजरता यह आंदोलन भारतीय इतिहास का एक ऐसा चरण था, जिसने देश को केवल गुलामी से लड़ना नहीं सिखाया, बल्कि अपने संसाधनों, श्रम और संस्कृति पर विश्वास करना भी सिखाया और यही उसकी सबसे बड़ी सफलता रही।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

- [1]. बिपिन चंद्र भारत का स्वतंत्रता संग्राम
- [2]. दादाभाई नौरोजी पोवर्टी एंड अन ब्रिटिस रूल इन इण्डिया
- [3]. आर.सी.दत्त इकोनोमिक हिस्टी ऑफ इण्डिया अनडर ब्रिटिस रूल
- [4]. एनसीईआरटी कक्षा 8, 10 और 12 इतिहास और राजनीति विज्ञान की पुस्तकें
- [5]. नेशनल आर्काइव्स ऑफ इंडिया -स्वदेशी आंदोलन पर दस्तावेज
- [6]. गांधी वांग्मय - खादी और स्वदेशी पर गांधीजी के विचार